अधिकारों का नैतिक आधार (Moral Foundations of Rights)

टी. एच. ग्रीन (1836-82) के पद-चिह्नों पर चलते हुए, लास्की ने अधिकारों के नैतिक आधार की पुष्टि की है। उसने यह स्वीकार किया है कि अधिकार राज्य की देन नहीं है बल्कि उनका स्थान राज्य की सत्ता (Authority) से ऊँचा है परंतु पूँजीवादी व्यवस्था की त्रुटियों का वर्णन करते हुए, लास्की ग्रीन से बहुत आगे बढ़ गया है।

अधिकार इस अर्थ में ऐतिहासिक नहीं है कि उन्हें किसी युग-विशेष में मान्यता प्राप्त हुई है। परंतु ये इस अर्थ में ऐतिहासिक अवश्यक है कि समाज ने अपने विकास के किसी स्तर पर उनकी माँग की है।

जब अधिकार नैतिक आधार पर स्थापित किए जाते हैं। तब यह आवश्यक हो जाता है कि उनके साथ कर्तव्य भी जुड़े हैं। अधिकार और कर्तव्य एक दूसरे के पूरक है। लास्की के शब्दों में मुझे दूसरों के आक्रमण से रक्षा प्रदान करने का अर्थ यह है कि मैं भी अपने आपको दूसरों पर आक्रमण करने से रोकूँ।

संपत्ति के अधिकार (Right to property)

लास्की ने इस शर्त पर स्वीकार किया है कि वह सर्व-हित में बाधक न हो और व्यक्ति को अपने कर्तव्यपालन में सहायता दे। जहाँ संपत्ति दूसरों के ऊपर शक्ति के प्रयोग का साधन बन जाए, वहाँ इस अधिकार को समाप्त कर देना चाहिए।